lith. *lėsas* macer; cf. boruss. vet. *likuts* parvus; v. लेश.)

लिह् 2. *P. A.* lingere, lambere (लेढि, लीढे v. gr. 102.). Hit. 28.13.: अस्थि निर्दशनः श्वे 'व जिह्वया लेढि· — *Intens.* लेलिह्, लेलिह्य· Mah. 3.10394.: लेलिहज्जिह्वया; A. 10.43.: लेलिहानैर् महानागैः; Bh. 11.30.: लेलिह्यसे ... लोकान् समग्रान् वदनैर् ज्वलद्भिः· — In dial. Vêd. रिह् pro लिह्, Rigv. 22.14.: पयो विप्रा रिहन्ति· (Cf. gr. ΛΙΧ, λείχω, λίχνος, λιχανός; hib. *lighim, im-lighim* «I lick»; lat. *lingo*; goth. *laigô* lingo = Caus. लेहयामि, v. gr. comp. 109[a]). 6.; lith. *laiźau* lingo, *liežuwis* lingua; slav. *ob-liz-a-ti* lingere.)

c. अव *i. q. simpl.* Dr. 6.21.: पुरा सोमो ऽध्वरगो ऽवलिह्यते शुना; Mah. 1.667.

c. आ *id.* Ragh. 2.37.: सेनान्यम् आलीढम् इवा 'सुरास्त्रैः·

c. परि circumlambere, *part. pass.* परिलीढ· R. Schl. II. 61.16.

c. सम् *i. q. simpl.* Mah. 3.10653.

c. सम् praef. परि circumlambere. Mah. 3.11500.: भीमः सृक्कणी परिसंलिहन्·

1. **ली** 1. *P.* (द्रवीकरणे *K.* द्रावणे *V.*) liquefacere, solvere. लीन solutus, dirutus, exstinctus. R. ed. Ser. II. 46.10.: लीनपुष्करपत्र· (Cf. 1. री, lith. *ly-ti* pluere, *lyj-a* pluit (*y* = *i*), *ly-tus* pluvia; slav. *li-ja-ti* fundere; hib. *leaghaim* «I melt, thaw, dissolve» = लयामि cum *gh* pro य्; *leaghan* «liquor»; lat. *liqueo, liquo.*)

c. आ *Pass.* dissolvi, tabescere. N. 11.14.: मुञ्जर् आलीयते भीता·

c. प्र *Pass.* dissolvi, perire, evanescere, mori. Bh. 8.18.: रात्र्यागमे प्रलयन्ते; Man. 4.240.: एकः प्रजायते जन्तुर् एकः प्रलीयते (schol. म्रियते); प्रलीन mortuus. Bh. 14.15.

c. वि *Pass. id. v. sq.*

c. वि praef. प्र *Pass. id.* Bh. 4.23.: कर्म समग्रम् प्रविलीयते; Mah. 1.6462.: फेनवत् प्रविलीयते·

c. सम् v. 2. ली·

2. **ली** 9. *P.* 4. *A.* लिनामि (gr. 385.) adhaerere, inhaerere, insidere (secundum *K.* et *V.* amplecti, श्लेषणे *K.* श्लिषि *V.* cf. लिङ्ग्.) लीन adjunctus, adhaerens, inhaerens, insidens, morans. Bhatt. 2.19.: न पङ्कजन् तद् यद् अलीनषट्पदम्; Ragh. 9.65.: कुञ्जलीनान् ... सिंहान्; Mah. 1.4310.4314.: ददृशुस् तत्र (आश्रमे) लीनांस् तांश् चौरान्·

c. अभि incumbere, inniti, *c. acc.* Megh. 37.: भुजतरुवनम् ... अभिलीनः·

c. नि 1) considere, *c. acc. vel loc.* Mah. 3.10560.: ऊरुं राज्ञः, समासाद्य, कपोतः श्येनजाद् भयात् ... निलिल्ये; Bhatt. 14.76.: निलिल्ये मूर्ध्नि गृध्रो ऽस्य· निलीन insidens. Bhatt. 2.5.: पुष्पैः ... निलीनभृङ्गैः· Incessus, habitatus. R. Schl. II. 46.3.: अरण्यानि ... निलीनानि मृगद्विजैः· निलीयमान sedens. Ur 86.4. infr.: आश्रमपादपशिखरे निलीयमानः· 2) procidere, procumbere. Mah. 3.11109.: निलिल्युर् वनवासिनः समुत्पेतुः खगास् त्रस्ताः; 10975.: भीता वायोर् निलिल्यिरे; A. 6.13.: वित्रेसुश्च निलिल्युश्च भूतानि (sic legendum pro विलिल्युश्च)·

c. नि praef. सम् sedere. Mah. 3.13654.: उपरिष्टाच्च वृक्षस्य वलाका सन्यलीयत·

c. सम् morari, versari. Su. 2.20.: संलीनम् अपि दुर्गेषु निन्यतुर् यमसादनम्·

लीढ v. लिह् (gr. 102.).

लीला *f.* 1) ludus, *praesertim feminarum amore captarum.* Megh. 36.66. Sringara-T. 1.8.9. 2) derisus. R. Schl. I. 62.13.

लुञ्च् 1. *P.* evellere. Bhatt. 14.59.: केशान् लुलुञ्च· (Cf. रुप्, लुप्; slav. *luč-i-ti* separare; goth. *raupja* evello, nostrum *raufe.*)

c. अव *id.* Mah. 3.10760.: अवलुञ्च्य जटाम् एकाम्; 10761.: अवलुञ्च्य पराम्·

c. वि Bhatt. 18.38.

लुञ्ज् 10. *P.* (scribitur लुज्; gr. 110[a]).) *i. q.* 2. लञ्ज्.

1. **लुट्** 1. et 4. *P.* se volutare. Bhatt. 3.32.: लुट्यन् सशोको भुवि; 18.11.: भूमौ लुट्यन्ति· *V.* लुठ्·